Name of the College - A.P.S.M College Barauni
Name - Dr. Rajesh Kumar Suman
Designation - [GT] Date: 25/06/2021
Class - B.A Part-2 [H] Unit → 02
Paper → III
Name of the topic → Trade Cycle. [व्यापारचक्र]

(ii) समक्रमिकता [Synchronism] - व्यापार-चक्र स्वरूप समक्रमिकता होता है, अर्थात् उस समय देश की सभी फर्मों पर एक जैसा ही रंग चढ़ जाता है। यदि वैभव काल है तो सभी फर्मों के साथ बढ़ जाते हैं, यदि मन्दी काल है तो सभी फर्मों पर मन्दी छायी रहती है। इसको समक्रमिकता कहते हैं अर्थात् उद्योग के अच्छे या बुरे काल एक ही समय में सब उद्योगों में होते हैं। यह फैलने वाली प्रवृत्ति किसी एक ही राष्ट्र के लोगों तक ही सीमित नहीं होती वरन् सम्पूर्ण व्यावसायिक संसार में फैल सकती है। यह फैलने वाली प्रवृत्ति किसी एक ही राष्ट्र के लोगों तक ही सीमित नहीं होती वरन् सम्पूर्ण व्यावसायिक संसार में फैल सकती है। संसार के राष्ट्र इतने अधिक एक-दूसरे पर आश्रित हैं कि "एक देश की अच्छी-बुरी व्यापारिक दशाएँ दूसरे देश के व्यापार में ~~अच्छी~~ अच्छी या बुरी दशाएँ उत्पन्न कर देती हैं।" स्पष्ट शब्दों में, एक देश में तेजी अथवा मन्दी में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के द्वारा अन्य देशों में पहुँचने की प्रवृत्ति होती है।

(ब) गौण विशेषताएँ [Secondary Characteristics] - अमेरिकन आर्थिक सभा [American Economic Association] की रिपोर्ट ने व्यापार-चक्र की अन्य विशेषताओं पर प्रकाश डाला है।

① कृषि के अतिरिक्त शेष उत्पादन तथा कीमतें एक ही दशा में गतिमान होते हैं।

(ii) उपभोग वस्तुओं तथा अन्य स्थायी वस्तुओं की अपेक्षा पूँजीगत वस्तुओं तथा टिकाऊ वस्तुओं पर किये गये कुल व्यय में उतार-चढ़ाव अधिक होते हैं।

(iii) कुल विक्रय की अपेक्षा तैयार माल पर किया गया व्यय अधिक घटता-बढ़ता है।

(iv) कुल उत्पादन और कुल रोजगार में परिवर्तन से ही मुद्रा की मात्रा (जिसमें बैंक मुद्रा सम्मिलित है) और उसकी प्रचलन गति में परिवर्तन होता है।

(v) कृषि पदार्थों की कीमतें लचीली होती है, किन्तु निर्मित वस्तुएं की कीमतें दृढ़ होती है।

(vi) लाभ से प्राप्त आय, अन्य स्रोतों से प्राप्त आय की अपेक्षा अधिक घटती-बढ़ती है।

शेष आगे